इज़हारे मोहब्बत कैसे ??

ePamphlet

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.

بسم الله الرحمن الرحيم

मोहब्बत एक ताक़तवर इन्सानी जज़्बा है,एक ऐसी क़ुव्वत जो किसी ज़िन्दगी को आबाद कर सकती है और बरबाद भी कर सकती है और दिल भी तोड़ सकती है। आज जब दुनिया इस जज़्बे की अहमियत पर वैलनटाइन का दिन मना रही है। हर तरफ. कई क़िस्म के दिल नज़र आ रहे हैं.दिलों का दिन, सुर्ख गुलाबों का दिन,शायरी का दिन, खुशियों का और सब से बढ़ कर मोहब्बत का दिन....!!

इसकी शुरूआत के मुताल्लिक़ कई रिवायात हैं.लेकिन सबसे ज़यादा भरोसे वाली Encyclopedia Britannica की वो रिवायत है जिस में यह बताया गया है कि उस दिन का ताल्लुक़ Saint Valentine से नहीं बल्के क़दीम (पुराने) रूमियों के एक देवता Lupercallia के मुशरिकाना त्योहार से है.यह त्योहार 15 फ़रवरी को Juno fabruata के शुरू में मुनअक़िद (आयोजित) होता था.

लड़कियों के नाम एक बरतन में डाल दिए जाते और मर्द देखे बग़ैर जिस लड़की का नाम निकालते वही त्योहार के ख़तम होने तक उनकी साथी बन जाती-

जब रूम में ईसाईयत को बढ़ावा मिला तो इस बेहूदा लेकिन मशहूरेआम त्योहार को ईसाईयत का नाम पहनाने की इस तरह कोशिश की के लड़कियों के नामों कि बजाए औलिया Saints के नाम डाल दिए गए. अब जिस saint का नाम निकलता मर्द लोगों को उसकी तक़लीद (पैरवी) सारा साल करनी पड़ती.लेकिन यह कोशिश नाकाम रही और दोबारा लड़कियों के नामों का क़ुरा डाला जाने लगा। कई लोग इस त्योहार को Cupid से मुताल्लिक़ समझते हैं,जो रूमियों का मोहब्बत का देवता था,जिस का यौमे वैलनटाइन में अहम किरदार है. ये लोगों के दिलों में तीर मार कर इन्को इश्क़ में मुब्तिला करता था. कहा जाता है कि उसकी माँ मोहब्बत की देवी Venus है. जिसका पसंदीदा फूल गुलाब है. एक और रिवायत के मुताबिक़ उसका ताल्लुक़ Saint Valentine से है,जिसको शाह Claudius ने 14 फ़रवरी को इस जुर्म में क़त्ल करवा दिया के वो इस के ऐसे फ़ोजियों की ख़ुफ़िया तौर पर शादीयाँ करवाता जिन्को शादीयों कि इजाज़त ना थी. दौराने क़ैद,बिशप को क़ैद ख़ाने के दारोग़ा की बेटी से इश्क़ हो गया,और उन्होंने उसको ख़त लिखा

जिसके आख़िर में दस्तख़त किए "तुम्हारा Valentine" ये तरीक़ा बाद में लोगों में रिवाज पा गया.496 में पापाये रूम Gelusius ने सरकारी तौर पर 15 फ़रवरी के मुशरिकाना त्योहार को यौम Saint Valentine में तब्दील कर दिया गया.

आज का यौमे वैलनटाइन

इस दिन को मनाने कि शुरूआत किसी भी तरह हुई हो,आज यह त्योहार अपनी मुशरिकाना और फ़ुजूल रिवायात कि तरफ़ लौटता नजर आता है.Cupid देवता और लड़के लड़कियों का आज़ादाना मिलना उस दिन का ज़रूरी हिस्सा है.France में वैलनटाइन की क़ुरा अंदाजी. ने सख़्त मुश्किलात पैदा कीं और 1776 में इसे मुकम्मल तौर पर ममनू(prohibited) क़रार दे दिया गया। England उस वक़त तक इस से बचा रहा जब तक Puritans की हुकुमत रही. लेकिन Charles II ने इसे दुबारा रिवाज दिया और यह अमरीका में दाख़िल हुआ और Eahowland ने पहली मरतबा इसे तिजारती शक्ल दी और Valentine कार्ड बेचकर पाँच हज़ार डॉलर कमाए 1990 में अमरीका में एक अरब वैलनटाइन कार्ड डॉक से भेजे गए और महकमा डॉक को 30 मिलियन डॉलर का मुनाफा. हुआ. फूलों का इस्तेमाल भी बढ़ गया। अब हर जगह इस मौक़े को व्यापारिक मक़्सद के लिए इस्तेमाल किया जाता है. नौजवान दिलों में जज़बात की आग भड़काकर किसी ख़ास मेहबूब की जरूरत का एहसास दिलाया जाता है।अख़बार में यह ख़बर छपी के एक खातून ने अपने शौहर से तलाक़ सिर्फ़ इस वजह से माँगी के उसने वैलनटाइन पर बीवी को कोई तोहफा. नहीं दिया। वैलनटाइन के दिन ने उस ख़ातून को मोहब्बत के बजाए, मोहब्बत से महरूमी के एहसास में मुब्तिला कर दिया।

यह कैसी मुहब्बत है जिसको बाक़ी रखना तोहफों पर मुनहसिर है?
यह कैसी मोहब्बत है जो सारे साल में सिर्फ एक दिन तक है ?
यह कैसी मोहब्बत है जो नफ़रत,जलन और एहसासे कमतरी पैदा करती है?

यौमे वैलनटाइन इस्कूल के उन बच्चों के लिए भी बहुत तकलीफ़ वाला साबित होता है जो ज़्यादा मशहूर नहीं होते और इस वजह से उन्हें इतने वैलनटाइन कार्ड नहीं मिलते जितने उनके साथियों को मिलते हैं।यौमे वैलनटाइन पर सुर्ख़ कपड़े पहनना, valentine cards ,

दिल और chocolates के तोहफ़े भेजना मुसलमानों में आम होता जा रहा है।बज़ाहिर मासूम और बेज़रर नज़र आने वाली इन चीज़ों के ज़रिए जिन्सी आज़ादी और लड़के लड़कियों के आज़ादाना ताल्लुक़ को फ़रोग़(बढ़ावा)दिया जा रहा है। साथ ही जज़्बात के आज़ादाना और खुले इज़हार को भी आम किया जा रहा है। जिस में अख़बारात में मोहब्बत भरे पैग़ामात छपवाना,रूमानी मुलाक़ातें करना, Dance और Music की मेहफ़िलों में जाना शामिल है। यहाँ तक के तालीमी इदारे भी अपने तालिबे इल्मों(छात्रों) के लिए इस क़िस्म की parties मुनअक़िद (आयोजित) कराने में पीछे नहीं रहते। परीणाम में बच्चों में भी शहवानी(लालसा)भावनाऐं और उन का खुला इज़हार का शौक़ पैदा होता है।नौजवान अपने पसंदीदा फ़िल्मों के Love Scene की नक़ल करते दिन दहाड़े नज़र आते हैं। इशक़ और मोहब्बत के इस सारे पागलपन मैं इस्लाम पीछे डाल दिया जाता है, और इस्लामी तालीमात का खुले आम मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है। सवाल यह पैदा होता है कि हम वैलनटाइन क्यों मना रहे हैं?क्या यह हमारा क़ौमी (राष्ट्रिय) त्योहार या दीनी (मज़हबी) त्योहार है ? त्योहार तो कौमों की पहचान होते हैं, दीन या कलचर की निशानी होते हैं।

अपने आप से पूछिए.....?

उस दिन जबके दुनिया मोहब्बत का दिन मनाती है और हम अपने आस पास तरह तरह के दिल देखते हैं अपने आप से पूछिए " क्या मेंने कभी उस हसती से मुहब्बत करने के बारे में सोचा है जिसने मुझे पैदा किया है ? जिसने मुझे वो दिल दिया जो मोहब्बत को महसूस कर सकता है, क्या इस दिल में कभी उस की मोहब्बत का एहसास पैदा हुआ? मैं कितनी बार उसकी मोहब्बत में रोया ? क्या मैं ने उस ज़ात पाक से मोहब्बत के इज़हार में कुछ वक़्त,कोशिश या माल ख़र्च किया है जिसने मुझे यह सब चीज़ें दी हैं ? क्या मुझ में इतना ऐतमाद है कि मैं उससे अपनी मोहब्बत का ऐलान कर सकूँ ? क्या अकेले में या भीढ़ में कभी एक छड़ के लिए भी मुझे उसकी याद आती है ? क्या ऐसा तो नहीं के वोह ख़ूबसूरत जज़्बा जो हमेशा क़ायम रहना चाहिए मैं उसको नफ़्स (आतमा)के वक़्ती सुकून में ज़ाया कर रहा हूँ और हमारी इस नाशुक्री के बावजूद वोह मेहरबाँ हस्ती(अल्लाह) हम से मोहब्बत ही करता है। हमारी मोहब्बत हमारे ईमान की कसोटी है।क्या हमारी मोहब्बत में

इतनी गहराई है कि हम उस ज़ात वाहिद को पहचान सकें,जिसको हम देख नहीं सकते मगर उसकी मोहब्बत की निशानियाँ हमारे आस पास बिखरी हुई हैं?या हमारी मोहब्बत इतनी मामूली है कि इसकी शुरूआत और इन्तिहा सिर्फ. इन्सानों तक महदूद है जो ठीक उस वक़्त बेवफा. साबित होते हैं जब हमें उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है। और हमारे इस तरह दिल दुखते हैं जिनकी मोहब्बतें दिल शिकनी और ग़म की वजह होती हैं। और जब हम इस दुनिया से जाते हैं तो सबसे पहले साथ छोड़ते हैं ?

<u>अपने आप से पूछिए!</u> क्या मैं रसूल अल्लाह ﷺ से मोहब्बत करता हूँ जिन्होंने फ़रमायाः

“क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है तुम में से कोई मोमिन नहीं जब तक वोह मुझसे अपने बाप,अपनी औलाद और तमाम इन्सानों से ज़्यादा मोहब्बत ना करे –“ (सही बुख़ारी)

क्या आपने कभी सोचा कि अल्लाह ताला की ख़ुशी और मोहब्बत हासिल करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?

<u>अपने आपसे पूछिए !</u> मैं लोगों से मोहब्बत क्यों करता हूँ क्या किसी की दौलत या ख़ूबसूरती इस मोहब्बत की वजह है या किसी की नेकी या अच्छा काम मेरे दिल में उसकी मोहब्बत उजागर करने की वजह हैं ?

<u>अपने आप से पूछिए!</u> क्या यौमे वैलनटाइन आतमा की ख़्वाहिशात की पैरवी के अलावा भी कुछ है ? क्या हम जानवरों की तरह बे सोचे समझे सिर्फ़ अपने वक़्ती जज़्बात और रिवाज की पैरवी कर रहे हैं ?

इस्लाम में लड़के और लड़की की दोस्ती बिल्कुल मना है। क़ुरआन मजीद में एक औरत के औसाफ. बयान किए गए हैं.(अन निसा:25)

“ पाकीज़ा ना शहवत परसत, ना ख़ुफ़िया (छुपे) दोस्त बनाने वालियाँ”

इस्लाम में शादी क ऐसा खूबसूरत बंधन है जिसमें मोहब्बत एक मोसमी या वक़्ती जज़्बा नहीं,ना ही यह ज़ाहिरी ख़ूबसूरती पर मुनहसिर है बल्कि एसा पुर सुकून रिशता है जिसकी बुनियाद पयार,रहम और एहसासे ज़िम्मेदारी है।

हक़ीक़ी मोहब्बत

एक मुस्लमान को हक़ीक़ी मोहब्बत अपने रब से होती है। वोह ज़ात पाक अज़ल से अबद तक क़ायम है। मुस्लमानों के पास मोहब्बत के इज़हार के लिए एक दिन पहले से ही मौजूद है और वो है ईदुल

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अधहा, जब मुस्लमान सिर्फ अल्लाह ताला की रज़ामंदी और सुन्नते इब्राहीमी की पैरवी में जानवर की क़ुर्बानी करते हैं।हमारी ज़िन्दगी में ख़ालिस और मज़बूत मोहब्बत है? हम सबसे ज़्यादा किस से मोहब्बत करते हैं,अपनी ज़ात और ख़्वाहिशात से या अपने रब से?अगर हम अल्लाह ताला से मोहब्बत करते हैं तो एक मुशरिकाना त्योहार कैसे मना सकते हैं,जबके हमारा रब शिर्क को सबसे ज़्यादा नापसंद करता है? एक मुस्लमान की मोहब्बत बामायने और इज़हारे मोहब्बत बामक़सद है। ईद उल अधहा पर हज़ारों रुपिये फूलों पर खर्च करने के बजाए ग़रीबों में गोश्त तक़्सीम किया जाता है। और जानवरों की खालें तक ज़ाया नहीं की जातीं.

आइए....हम हक़ीक़ी मुोहब्बत पाऐं।

हक़ीक़ी मोहब्बत क़ुर्बानी चाहती है
और मैं ने अपना सब कुछ देदिया
यही है सच्ची मोहब्बत की ख़ालिस तरीन सूरत।
अब मैं अपना चेहरा तेरी तरफ़ करता हूँ
मेरी दुनिया और तमाम आसमानों के मालिक
मैं तेरा और सिर्फ तेरा हूँ
मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी तेरे लिए।
मेरा जीना और मेरा मरना सिर्फ तेरे लिए।
एक वादा मेरा है
के जान दूँगा तेरे लिए।
एक अहद मेरा है
के मेरी इबादत सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरे लिए।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

AlHuda Welfare Trust India
Post Box Number 444
Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
Landline: +918040924255.
official email: alhuda.india@gmail.com
Mobile phone: +91-9535612224

www.farhathashmi.com
www.alhudapk.com